कृष्ण जन्म कथा — जन्म-अध्याय का पुनर्कथन

Krishna Janma Katha — Complete Birth-Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Bhagavata Purana 10.3, exact controlling revision 210881. Also compared: Wikisource revision API — matching archived source content inspected; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — source and adaptation licence; GRETIL — Bhagavata Purana 10.3, comparison-only; noncommercial text not reused; VedaBase 10.3.11 — mental-gift interpretive comparison only; copyrighted prose not reused.

Valkala's own retelling of the katha in Bhagavata Purana 10.3.1–53, Sanskrit Wikisource revision 210881, not a transcription of the original text.

जन्म और दिव्य रूप

KATHA 10.3.1–12

शुकदेव जन्म के समय का वर्णन करते हैं। दिशाएँ शांत थीं, आकाश निर्मल था, नगर और ग्राम मंगलभाव से भरे थे। नदी और सरोवर का जल स्वच्छ, वन फूलों और पक्षियों की ध्वनि से जीवंत तथा हवा सुगंधित थी। अग्नियाँ शांत भाव से जलीं और सज्जनों के मन प्रसन्न हुए। कथा दिव्य ढोल, गायक, स्तुति, नृत्य और फूलों की वर्षा का दृश्य देती है। जन्म-नक्षत्र का उल्लेख है, पर इस पंक्ति में उसका नाम नहीं दिया गया है; यह किसी वर्तमान वर्ष का पंचांग नहीं है।

अंधेरी मध्यरात्रि में देवकी के यहाँ विष्णु ऐसे प्रकट हुए जैसे पूर्व दिशा में पूर्ण चंद्रमा। वसुदेव ने कमल जैसे नेत्रों और चार भुजाओं वाला अद्भुत बालक देखा। उसके दिव्य आयुध, श्रीवत्स-चिह्न, कौस्तुभ, पीत वस्त्र, मेघ जैसा रूप, मुकुट, कुंडल और अन्य आभूषण थे। आनंद और विस्मय से वसुदेव ने मन में ब्राह्मणों को दस हजार गायें देने का संकल्प किया। यह मन का दान-संकल्प है, कारागार से बाहर निकलकर उसी समय दान करने का दृश्य नहीं। उन्होंने उस प्रकाशमान बालक को परम पुरुष समझकर हाथ जोड़कर स्तुति की। दिव्य वातावरण और रूप धार्मिक कथा के चित्र हैं, ऐतिहासिक प्रमाण या जन्मोत्सव के अनिवार्य आयोजन नहीं।

Shuka describes the time of birth: peaceful directions, a clear sky and auspicious towns and villages. Rivers and ponds are clear, forests alive with flowers and birds, and the breeze fragrant. Fires burn peacefully and good people's minds rejoice. The account depicts celestial drums, singers, praise, dance and showers of flowers. A birth-star setting is mentioned, but this line does not name the star; it is not a calendar for a current year.

At dark midnight Vishnu appears to Devaki like the full moon in the east. Vasudeva sees a wondrous lotus-eyed child with four arms, divine weapons, the Shrivatsa mark, Kaustubha jewel, yellow clothes, a cloud-like appearance, crown, earrings and other ornaments. In joy and amazement he mentally resolves to give ten thousand cows to Brahmins. This is a mental gift, not a scene of leaving captivity to distribute cows immediately. Recognizing the luminous child as the supreme person, he offers praise with folded hands. The divine setting and form are religious imagery, not historical proof or obligatory birthday festivities.

वसुदेव और देवकी की प्रार्थनाएँ

KATHA 10.3.13–31

वसुदेव कहते हैं कि बालक प्रकृति से परे परम पुरुष और सब बुद्धियों का साक्षी है। वे सृष्टि और उसमें ईश्वर की उपस्थिति पर विचार करते हैं: तत्व मिलकर शरीर का रूप बनाते हैं, पर मूल सत्ता उन रूपों में आने से बदल नहीं जाती। उनके अनुसार भीतर-बाहर का भेद परमात्मा को सीमित नहीं करता; जो केवल दिखते गुणों को अलग सत्य मानता है, वह पूरा संबंध नहीं समझता। जन्म, पालन और अंत ईश्वर के आश्रय में कहे जाते हैं, भले वह स्वयं परिवर्तन और गुणों से परे हो। सफेद, लाल और काले रूपों को वे पालन, सृजन और संहार से जोड़ते हैं।

वसुदेव बालक के आगमन को लोक-रक्षा और अत्याचार रोकने से जोड़ते हैं। फिर कंस का भय बताते हैं: उसने पहले बच्चों को मारा है और इस जन्म की सूचना मिलने पर हथियार लेकर आ सकता है। देवकी भी भयभीत होकर प्रार्थना करती हैं। वे बालक को अव्यक्त ब्रह्म, विष्णु और भीतर प्रकाश देने वाला कहती हैं; उनके स्तवन में प्रलय के बाद शेष रहने वाली सत्ता और समय पर ईश्वर का अधिकार आता है। वे शरण से मृत्यु का भय हटने की धार्मिक बात कहती हैं, वास्तविक जीवन में मृत्यु से प्रतिरक्षा का वादा नहीं।

देवकी कंस से रक्षा चाहती हैं और कहती हैं कि यह चार-भुज, आयुधों वाला अलौकिक रूप सबकी आँखों के सामने न रहे। वे नहीं चाहतीं कि कंस जन्म का पता लगाए। पूरे विश्व को धारण करने वाली सत्ता उनके गर्भ में आई—यह विस्मय भी उनकी प्रार्थना में है। दोनों की बातें धर्म-दर्शन और माता-पिता की चिंता हैं, किसी परिवार के लिए चिकित्सा, सुरक्षा या संतान की गारंटी नहीं।

Vasudeva calls the child the supreme person beyond nature and witness of every mind. He reflects on creation and divine presence: elements combine into embodied forms, but their underlying reality is not changed by appearing in them. In his account, inside and outside do not limit the supreme self; treating visible qualities as an isolated reality misses their relationship. Birth, preservation and dissolution are spoken of in dependence on the divine, though the divine itself transcends qualities and change. White, red and black forms are linked with preservation, creation and dissolution.

He connects the child's coming with protecting the world and restraining oppression, then voices concern about Kamsa: earlier children have been killed, and news of this birth may bring him armed. Devaki also prays in fear. She calls the child unmanifest Brahman, Vishnu and inner light; her praise describes what remains after dissolution and divine authority over time. Her language about refuge removing death's fear is theology, not a promise of physical immunity from death.

Devaki asks protection from Kamsa and requests that the supernatural four-armed, weapon-bearing form not remain visible to ordinary eyes. She does not want Kamsa to learn of the birth. Her prayer also marvels that the one containing the whole universe has entered her womb. These speeches combine theology with parental anxiety, not medical, safety or fertility guarantees for real families.

पहले जन्मों का स्मरण

KATHA 10.3.32–45

भगवान देवकी से कहते हैं कि पहले सर्ग में वे पृश्नि थीं और वसुदेव सुतपा प्रजापति थे। ब्रह्मा के निर्देश के बाद दोनों ने इंद्रियों को संयम में रखकर कठोर तप किया। कथा वर्षा, हवा, गर्मी और शीत सहना, श्वास रोकना तथा पत्तों और वायु पर निर्वाह जैसे अत्यंत कठिन प्रसंग कहती है; बारह हजार दिव्य वर्षों का वर्णन आता है। ये पुराण-कथा की अलौकिक अवधि और तप हैं, किसी पाठक के लिए सांस रोकने, भूखे रहने या मौसम का संकट सहने की विधि नहीं।

भगवान बताते हैं कि उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्होंने वर माँगने को कहा। दम्पती ने अपने लिए उनके जैसा पुत्र माँगा, मुक्ति नहीं। कथा इसे देवमाया से जुड़ी इच्छा कहती है। वर मिलने के बाद वे सामान्य गृहस्थ जीवन में लौटे। वैसा दूसरा कोई न मिलने पर भगवान स्वयं उनके पुत्र पृश्निगर्भ हुए। फिर अदिति और कश्यप के यहाँ उपेन्द्र के रूप में आए, जिन्हें वामन भी कहा गया। अब तीसरे जन्म में वे फिर उन्हीं के पुत्र हैं।

उन्होंने कहा कि यह दिव्य रूप पहले जन्मों का स्मरण कराने के लिए दिखाया गया; केवल सामान्य शिशु-रूप से वह पहचान न होती। पुत्र-भाव और ब्रह्म-भाव से प्रेमपूर्वक स्मरण करने पर उनकी परम गति का धार्मिक आश्वासन दिया गया। यह कथा का पूर्वजन्म और मुक्ति संबंधी कथन है, किसी दम्पती की वास्तविक पहचान, संतान पाने का उपाय या किसी की आध्यात्मिक स्थिति का निर्णय नहीं।

The divine child tells Devaki that in an earlier creation she was Prishni and Vasudeva was the progenitor Sutapa. Following Brahma's instruction they restrained their senses and undertook severe penance. The account describes exposure to rain, wind, heat and cold, breath retention and subsistence on leaves and air over twelve thousand divine years. These are supernatural duration and austerity imagery, not instructions to hold one's breath, starve or endure dangerous weather.

Pleased with their devotion, he offered a boon. They asked for a son like him rather than liberation, a desire the narrative associates with divine maya. After receiving the boon they resumed household life. Finding no other equal, he became their son Prishnigarbha. Later he was born to Aditi and Kashyapa as Upendra, also called Vamana. This is the third birth in which he again becomes their son.

He explains that the divine form was shown to recall those earlier births; an ordinary infant form would not have prompted that recognition. Loving contemplation of him as son and Brahman is accompanied by a religious assurance of attaining his supreme destination. This is the story's language of past lives and liberation, not proof of a real couple's identity, a fertility method or judgment of anyone's spiritual standing.

नन्द के घर तक यात्रा और वापसी

KATHA 10.3.46–53

शुकदेव कहते हैं कि यह बताकर भगवान शांत हुए और माता-पिता के देखते हुए सामान्य शिशु जैसे हो गए। वसुदेव प्रेरित होकर बालक को जन्म-कक्ष से बाहर ले चलने को तैयार हुए। उसी समय नन्द की पत्नी के यहाँ योगमाया का जन्म हुआ। कथा में उसके प्रभाव से पहरेदार और नगरवासी सो रहे थे। भारी कपाट और लोहे के बंधनों वाले द्वार वसुदेव के आते ही अपने आप खुल गए।

वर्षा होने लगी और शेष ने अपने फनों से पानी रोका। यमुना गहरी धारा, लहरों, झाग और भँवरों से भरी थी, फिर भी कथा में उसने वसुदेव के लिए मार्ग दिया, जैसे समुद्र ने श्री के पति के लिए दिया था। वसुदेव नन्द के व्रज पहुँचे, जहाँ लोग सो रहे थे। उन्होंने पुत्र को यशोदा के बिस्तर पर रखा, वहाँ की कन्या को लिया और वापस आए। इस चयनित अध्याय में जल का बालक के चरण छूने या किसी अन्य अतिरिक्त दृश्य का विस्तार नहीं है।

वसुदेव ने कन्या को देवकी के बिस्तर पर रखा, अपने पैरों में लोहे के बंधन फिर लगाए और पहले की तरह वहीं रहे। अंत में बताया गया कि थकान और नींद के कारण यशोदा जन्म होने को जानती थीं, लेकिन शिशु का लिंग नहीं जान पाईं। यहीं कृष्ण-जन्म का पूरा चयनित अध्याय समाप्त होता है। अगले अध्याय का कंस और देवी का प्रसंग इस पाठ में नहीं जोड़ा गया है। द्वार, शेष और नदी के चमत्कार धार्मिक कथा हैं; बच्चे को बाढ़ या नदी में लेकर जाना कभी इस पुनर्कथन का निर्देश नहीं है।

Shuka says the divine child falls silent and becomes like an ordinary infant before his parents' eyes. Inspired, Vasudeva prepares to carry him out of the birth chamber. At the same time Yogamaya is born to Nanda's wife. In the narrative her influence puts guards and townspeople to sleep. The heavy doors, secured with iron bolts and chains, open by themselves as Vasudeva approaches.

Rain falls and Shesha shelters them with his hoods. The Yamuna is deep, swift, foaming and full of whirlpools, yet grants a path, compared with the ocean making way for the lord of Shri. Vasudeva reaches Nanda's settlement, where the people sleep. He places his son on Yashoda's bed, takes the girl born there and returns. This selected chapter does not elaborate a scene of water touching the infant's feet or other additional episodes.

He lays the girl beside Devaki, refastens the iron restraints on his feet and remains as before. The final verse explains that, exhausted and asleep, Yashoda knows a birth has occurred but does not know the child's sex. This completes the entire selected Krishna-birth chapter. The following chapter's Kamsa and goddess episode is not appended. The doors, Shesha and river miracles belong to religious narrative; carrying a child into floodwater or a river is never an instruction from this retelling.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Krishna Janma Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Bhagavata Purana 10.3.1–53, revision 210881, linked in Sources. Source electronic text: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, Roman-Hindi rendition, English rendition, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. The notice applies to this retelling and its language layers, not unrelated site content or code. GRETIL is comparison-only and its text is not included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.